रिकॉर्डः– तुम्हीं हो माता..... ॐ शिवबाबा केअर आदिदेव ब्रह्मा 11/3/63
ओम् शांति। बच्चों ने गीत सुना। यह महिमा असल मंदिरों में और प्रकार से गाते हैं। इस गीत में फिर थोड़ा फर्क कर लिया है। खास जब कोई ल०ना० वा रा०कृ० के मंदिर में जाते हैं तो यही महिमा गाते हैं कि तुम मात–पिता, हम बालक तेरे....। राधे–कृष्ण को भी वो माता–पिता समझते हैं। प्रवृत्तिमार्ग तो है तो त्वमेव माताश्च पिता.... भी कहते हैं। अब फिर यह गीत बनाया है। तुम मात–पिता, बंधु–सहायक, खिवैया हो। ये गीत भी तुमको मदद करते हैं। बरोबर जब हम शिवबाबा के बने हैं तो हम काँटे से फूल बन जाते हैं। बरोबर देवी–देवताओं को ही फूल कहा जाता है। वो ही फूल चढ़ाने लायक हैं। सतयुग में सभी फूल ही फूल हैं। सब एक/दो को सुख देते हैं। यहाँ सब काँटे हैं। तुम अब इस एक के बने हो, जिसको आधा कल्प भगत याद करते हैं। आधा कल्प है ज्ञान, आधा कल्प भक्ति; आधा कल्प दिन, आधा कल्प रात। यह तो कोई जानते नहीं; क्योंकि कल्प की आयु ही भिन्न–2 कर दी है। अब बाप ने समझाया है कि आधा कल्प दिन, आधा कल्प रात। भक्ति है रात, अंधियारा मार्ग। अब हूबहू 5000 वर्ष पहले माफिक तुम (बच्चों) को बेहद के बाप से बेहद का स्वर्ग का सुख मिलता है। नर्क में तो कोई से स्वर्ग का सुख मिल नहीं सकता। स्वर्ग के सुख होते ही हैं सतयुग में। तो तेरे खुशी का पारावार न होना चाहिए। जैसे ईश्वर के खुशी का पारावर नहीं है। उनकी कितनी महिमा का कितना करें। तुम बच्चों को उस बेहद के बाप के महिमा में ही रहना है। जैसे बड़े ते बड़ा बादशाह है। अब तो बहुत मनुष्य हो गए हैं। बहुत भाषाएँ हैं। सतयुग में तो एक देवी–देवता धर्म, एक ही भाषा और कोई फ्रिक्शन है नहीं। एक ही कुल है। प्रजा भी एक देवी–देवता धर्म की है। गाँव तो अलग–2 होंगे। तो उन स्वर्ग के सुखों को तो तुम बच्चे जानते हो। देखो, बाबा चित्र भी बहुत बनवाते रहते हैं। बच्चों को समझाने लिए चित्रों का भी बहुत आधार लेना है। ईश्वर तो सभी कहते हैं। गुरुनानक ने भी ईश्वर की महिमा ....की है। तो तुम ये चित्र ले सिक्ख लोगों को भी समझाए सकते हो कि ये तुम सभी का बाप है, जो आए नई दुनिया रचते हैं। निराकार प० की पूजा भी होती है। शिव(लिंग) के मंदिर भी हैं। ऐसे (भी) नहीं, शिवबाबा को नहीं जानते। सभी धर्म वाले कोई न कोई नाम–रूप, भाषा में जानते हैं। फिर नाम अपना ...ख दिया है। आत्मा का रूप तो सब ऐसे ही समझते हैं। भारत में भी लिंग का चित्र है। बाबा का नाम तो जहाँ–तहाँ है। मुस्लिम लोग खुदा कहते हैं तो उनका चित्र भी होगा। उनकी याद भक्तिमार्ग में भूल नहीं सकती। भूलती तब है जब हम सतयुग में प्रालब्ध पाते हैं। वहाँ याद नहीं रहती, नहीं तो वो भी भक्ति हो जाए। याद उनको किया जाता है जिससे सुख मिलता है। वहाँ तो सुख है ही। (य)हाँ से हम सुख ले जाते है। वहाँ सुख की दुनिया है। इतना सुख दिया है तब अब दुख में उनको याद करते हैं। दुख देने वाले को थोड़े ही याद किया जाता है; जैसे औरंगजेब ने दुख दिया, नाज़ार(नादिर शाह) के लिए कहते हैं बहुत जालिम था। यहाँ तो सभी वास्तव में दुख ही देने वाले हैं। अब बाबा कितना सुख देते हैं। ऐसे भी नहीं, बाबा सुख देकर गए; इसलिए वहाँ उनको याद करेंगे। नहीं, वहाँ सिर्फ इतना जानते हैं, आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। बस, वहाँ न बीमारी है, जो डॉक्टर को याद करे। यहाँ तो बीमार होते तो अंत समय डॉक्टर को पुकारते रहते; जैसे अब राजेंद्र प्रसाद मरा तो कहते हैं, इनको खाँसी हुई, दवाई न मिली। अब इन्क्वायरी हो रही है, ऐसा क्यों हुआ, क्या डॉक्टर लोग सो गए? तुम बच्चे जानते हो, सतयुग में ऐसी कोई तकलीफ नहीं होती। अब बाप से बड़ा सुख ... मिल रहा है। उनको हाथ दिया है तो उस पार ले चलते हैं। मनुष्य नहीं समझते कि उस पार किसको कहा जाता है। तुम जानते हो, बाबा हमको दुखधाम से सुखधाम ले चलते हैं। अब माया रावण

ने बड़ा दुख दिया है। भारत का सबसे बड़ा दुश्मन है यह माया रावण। उनपर विजय पानी है अथवा धनुष तोड़ना है, तब सीता को वा लक्ष्मी को वरेंगे। लिखा है ना कि राम ने धनुष तोड़ सीता को वरा। वास्तव में धनुष यह पाँच विकारों का तोड़ना है। रावण पर जीत पानी है। तुम अब यही पुरुषार्थ कर रहे हो, ना० वा राम बन, लक्ष्मी को वा सीता को वरने का। सभी तो यह धनुष नहीं तोड़ते। पुरुषार्थ तो सभी करते हैं सीता को वा लक्ष्मी को वरने का। वह सारा पुरुषार्थ पर है कि ना० बनते हैं वा राम बनते हैं। इसलिए सम्पूर्ण निर्विकारी तो बनना ही है। तो अंदर में कितनी खुशी होनी चाहिए। हम ना० वा राम बन रहे हैं। रावण अपवित्र था तो सीता को वर न सका। ये सभी बातें यहाँ की हैं। उन्होंने फिर बैठ इनके नाटक बनाए हैं। उनमें झूठ बहुत मिलाया है। बाप तो इस नॉलेज से राजाओं का राजा बनाते हैं। तो कितनी खुशी की बात है। बहुत–2 सुख मिलने वाले हैं; परन्तु सच्चे बाप से सच्चा हो रहना है। सच्ची दिल पर साहब राज़ी रहता है। उनकी कितनी महिमा कर, कितनी करें। कोई तो उनकी महिमा गाए गए हैं, कोई तो कहकर गए हम ईश्वर और उनकी रचना को नहीं जानते। यह राज़ भी तुम ब्राह्मण समझाए सकते हो कि वो बाप कैसे नई रचना रचते हैं, पुरानी कैसे विनाश करते हैं। बस, यही बुद्धि में चलता रहे। समझाने की ताकत चाहिए, तंग न होना चाहिए। सभी को सुख देना है। अब भल अवस्थाएँ कच्ची–पक्की हैं; परन्तु अंत में तो पक्की हो जाएँगी। बहुत बच्चे पूछते हैं कि अवस्था को अडोल कैसे रखें? बाबा कहते हैं, इसमें तो कोई तकलीफ नहीं। बाप को याद करना पहला फर्ज है। धर्म का बच्चा बने हैं, ऐसा बाप थोड़े ही भूल जाना चाहिए। जानते हैं, हमारा शिवबाबा गुप्त है। आत्मा भी गुप्त है। दोनों देखने में नहीं आते हैं। बाप कहते हैं, तुम आत्माएँ हमारी थीं। मैं ही सबको भेज देता हूँ। पैगम्बरों को भेजता हूँ तो तुमको भी भेजता हूँ। तो उन्हों के फॉलोअर्स को भी भेजता हूँ, नहीं तो धर्म की वृद्धि कैसे हो! अब तुम बच्चों को बुद्धि में सभी बातें हैं। कोई को समझाना तो बहुत सहज है। जो हमारे धर्म के होंगे वो अच्छा समझेंगे। बहुत बिछुड़े हुए हैं। बच्चे लिखते भी हैं ना– बाबा, नए–2 दो–चार पैदा हुए हैं, अभी कलियाँ हैं। कब फिर लिखते कि वो आते नहीं। तो समझते, उतना ही तकदीर में होगा। जैसे मेजर था। तकदीर तो अच्छी थी; परन्तु ठहरता तो और तीखा जाता; परन्तु तकदीर में इतना था। भल संस्कार ले गए; परन्तु ऑरगन्स छोटे होने कारण सर्विस तो नहीं कर सकते। अब इन बातों को कितना बैठ पूछेंगे। हम फिर अपनी सर्विस में लग जाते हैं। मु(ख्य) बात है याद की। गुरु लोग भी मंत्र देते हैं कि अंत समय याद रहे; परन्तु रहता नहीं। यहाँ तो इससे हमको बहुत–2 प्राप्ति है; इसलिए निरंतर बाबा की याद और खुशी में रहना है। ऐसे मत समझो, हमेशा कोई प्रफुल्लित रह सकता है। बाबा–मम्मा भी सदैव नहीं रह सकते। सदैव तब रहे जब श्वासों श्वास उनकी याद में रहे। इस समय ये इम्पॉसिबुल है, अंत में पॉसिबुल होगा। तो भी पुरुषार्थ करना है। यह सारा कुटुंब एडॉप्टेड चिल्ड्रेन का है। प्रजापिता ब्रह्मा है तो ब्राह्मणों की बड़ी प्रजा होगी ना! जैसे क्राइस्ट के मुख से क्रिश्चियन निकले। तो यह ब्राह्मणों की भी कितनी संख्या होगी, जितने वहाँ देवी–देवताएँ बनने हैं। उनमें जितनी जिसमें ताकत होगी उस अनुसार समझाए सकते हैं। समझाने से नशा चढ़ता है। महारथी हमेशा ज्ञान की वर्षा करते रहेंगे, बहुतों को खुश करेंगे। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ